६. नवनीत

– संत तुकाराम

महाराष्ट्र का प्रसिद्ध 'पालखी सोहळा' (पालखी उत्सव) यू ट्यूब पर देखिए और उसका वर्णन कीजिए।

कृति के लिए आवश्यक सोपान :

- 'पालखी सोहळा' देखने के लिए प्रेरित करें। • किसी दृश्य का वर्णन करने के लिए कहें।
- 'पालखी सोहळा' पर कक्षा में चर्चा कराएँ।

तुकादास राम का, मन में एकहि भाव ।
तो न पालटू आवे, येही तन जाय ।।१।।
तुका रामसूं चिता बाँध राखूं, तैसा आपनी हात ।
घेनु बदरा छोर जावे, प्रेम न छुटे सात ।।२।।
चित सुंचित जब मिले, तब तन थंडा होय ।
तुका मिलना जिन्ह सुं, ऐसा बिरला कोय ।।३।।
चित्त मिले तो सब मिले, नहिं तो फुकट संग ।
पानी पथर एक ही ठोर कोर न भीजे अंग ।।४।।
तुका संगत तिन से कहिए, जिन से सुख दुनाए ।
दुर्जन तेरा तू काला, थीतो प्रेम घटाए ।।५।।।
तुका मिलना तो भला, मन सूं मन मिल जाय ।
उपर उपर मीटा घासनी, उन को को न बराय ।।६।।
तुका कुटुंब छोरे रे लड़के, जोरो सिर मुंडाव ।
जब ते इच्छा नहीं मुई, तब तूँ किया काय ।।७।।
तुका इच्छा मीट नहीं तो, काहा करे जटा खाक ।
मथीया गोलाडार दिया तो, नहिं मिले फेरन ताक ।।८।।।
ब्रीद मेरे साइयाँ को, तुका चलावे पास ।
सुरा सोहि लरे हम से, छोरे तन की आस ।।९।।
कहे तुका भला भया, हुआ संतन का दास ।
क्या जानू केते मरता, न मिटती मन की आस ।।१०।।
तुका और मिठाई क्या करूँ, पाले विकार पिंड ।
राम कहावे सो भली रूखी, माखन खीर खांड ।।११।।

परिचय

जन्म : खोजकर्ताओं के अनुसार आपका जन्म १६०८ के बीच देहू, पुणे (महाराष्ट्र)
मृत्यु : १६५०
परिचय : संत तुकाराम एक महान संत और कवि थे। वे सत्रहवीं शताब्दी के भारत में चल रहे भक्ति आंदोलन के प्रमुख स्तंभ थे। संत तुकाराम जी धर्म संरक्षण के साथ-साथ पाखंड के खंडन का कार्य निरंतर रूप से किया। आपके 'अभंग' अंग्रेजी भाषा में भी अनूदित हुए हैं।
प्रमुख कृतियाँ : 'अभंग वाणी' आपकी प्रमुख कृति है।

पद्य संबंधी

दोहरे : कबीरदास जी के दोहे भी तुकाराम जी के समय महाराष्ट्र में भली-भाँति प्रचलित थे। तुकाराम जी ने भी कुछ दोहरे बनाए। हिंदी दोहरों की दृष्टि से इनमें छंदोभंग तो पद-पद पर है पर तुकाराम जी की अभंग कविता को किसी भंग का डर ही न था। इन दोहरों का भी आस्वाद लीजिए।

प्रस्तुत दोहरों में तुकाराम जी ने हमें नीति संबंधी उपदेश दिए हैं। ये चरित्र संवर्धन में सहायक हो सकते हैं।

शब्द संसार

बिरला (वि.) = अलग, निराला
थीतो (पुं.दे.) = स्थित
मुंडाव (पुं.दे.) = मुंडन
विकार (पुं.सं.) = बिगाड़; दोष, खराबी

कल्पना पल्लवन

'तुकाराम जी संत ही नहीं समाज सुधारक भी थे', इस विषय पर अपने विचार लिखिए।

लेखनीय

किसी महिला संत का कोई पद सुंदर अक्षरों में भावार्थसहित लिखिए।

पठनीय

महाराष्ट्र की संत परंपरा पर भाषण पढ़कर कक्षा में प्रस्तुत कीजिए।

श्रवणीय

'खरा तो एकचि धर्म' यह कविता सुनिए और सस्वर गायन कीजिए।

संभाषणीय

निम्नलिखित मुद्दों के आधार पर विविध संतों के बारे में कक्षा में चर्चा का आयोजन कीजिए।

- महाराष्ट्र संतों की भूमि
- विविध संतों के नाम और काल
- सुवचन
- ग्रंथ संपदा

पाठ के आँगन में

(१) सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए।

(क) आकृति पूर्ण कीजिए :

शरीर में विकार उत्पन्न करने वाले व्यंजन

(ख) कविता से निम्न शब्दों के अर्थवाले शब्द लिखिए :

शरीर	कौन	निराला	लंबे बाल

(२) चित्त समाधान के लिए साधना स्पष्ट करने वाली पंक्तियाँ स्पष्ट कीजिए।

(३) संत तुकाराम के किन्हीं चार दोहरों का भावार्थ स्पष्ट कीजिए।

कविवर्य रवींद्रनाथ टैगोर जी की हिंदी में अनूदित कविता पढ़िए।

पाठ से आगे

रचना बोध

.....

.....

.....